''कषाय स्वरूप''

प्रकाशक
श्री साधुमार्गी पब्लिकेशन

''कषाय स्वरूप''

❖ **संस्करण** : प्रथम- जुलाई 2017

❖ **प्रतियां** : 1000

❖ **मूल्य** : 10 रुपये

❖ **अर्थ सहयोगी** : स्वधर्मी परिवार

❖ **पुस्तक प्राप्ति स्थान :**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड़, गंगाशहर बीकानेर-334401 (राज.)
फोन: 0151-2270261-62, 2270359

आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र
राणाप्रताप नगर रोड, सुन्दरवास
उदयपुर -313001 (राज.)
फोन: 0294-2490717, 2490306

❖ **प्रकाशक :**

श्री साधुमार्गी पब्लिकेशन्स
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड़, गंगाशहर बीकानेर-334401 (राज.)
फोन: 0151-2270261-62, 2270359

कषाय स्वरूप

कषाय के स्वरूप को समझाने के लिए चार भागों में इनका वर्णन किया जा रहा है-

1. कषाय की परिभाषा व भेद
2. कषायों की स्थिति का वर्णन
3. कषायों के उदय में गतिबंध
4. कषायों की 16 उपमाएं

1. कषाय की परिभाषा व भेद

कषाय मोहनीयः- कष=संसार, आय=लाभ (प्राप्ति, वृद्धि)
जिस कर्म के उदय से संसार की वृद्धि हो उसे कषाय मोहनीय कर्म कहते हैं।

कषाय मोहनीय के सोलह भेदः-

1-4 अनंतानुबंधी	-	क्रोध, मान, माया, लोभ
5-8 अप्रत्याख्यान	-	क्रोध, मान, माया, लोभ
9-12 प्रत्याख्यानावरण	-	क्रोध, मान, माया, लोभ
13-16 संज्वलन	-	क्रोध, मान, माया, लोभ

1. **अनंतानुबंधीः-** अनन्त=संसार, अनुबंधी=लगातार बनाये रखना।

जिस कर्म के उदय से जीव संसार प्रवाह में ही बना रहता है उसे अनंतानुबंधी कषाय* कहते हैं। (संसार का अंत नहीं होता, अतः संसार का दूसरा नाम अनंत भी है।

---

* अनंत=आससंसारं यावत् अनुबंध=प्रवाहो येषां तेऽनन्तानुबंधिनः
अनंतं=संसार कर्म वा बंन्धन्तीत्येवं शीला अनंतबन्धिनः।

-श्रीमद् गर्गमहर्षि प्रणीत प्रथम कर्मग्रन्थ गाथा-41, 42 की परमानंद वृत्ति पत्रांक-25, 26

तत्रानत संसार मनुबन्धन्तीत्येवंशीला बन्धिनः। यस्मादनन्तं संसारनुबान्धन्ति दोहिनाम्। ततोऽनन्तानुबन्धीती, संज्ञाऽऽघेषु निवेशिता।।

-श्रीमद् देवेन्द्रसूरि विरचितं कर्मविपाक गाथा-17 स्वोपज्ञ वृत्ति पत्रांक-34+बंधशतक गाथा- 37, 38 की मलहेमचंदाचार्य वृत्ति पत्रांक-46(A)

श्रीमत् प्रज्ञापना पद-23 मलयगिरि वृत्ति पत्रांक-468(A)
श्रीमत् स्थानांग सूत्र स्थान-4 उद्देशक-1 की अभयदेव सूरि कृत वृत्ति

2. **अप्रत्याख्यानः**- अ=नहीं, प्रत्याख्यान=विरति (व्रत, प्रत्याख्यान)।

जिस कर्म के उदय से जीव किसी भी प्रकार के व्रत प्रत्याख्यान को स्वीकार नहीं कर सकता, उसे अप्रत्याख्यान कषाय कहते हैं।

3. **प्रत्याख्यानावरणः**- प्रत्याख्यान=विरति (सर्व विरति) आवरण=ढ़कना।

जिस कर्म के उदय से जीव सर्व विरति रूप प्रत्याख्यान को स्वीकार नहीं कर सकता उसे प्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं।

4. **संज्वलनः**- सं=थोड़ा (आंशिक), ज्वलन=जलाना।

जिस कर्म के उदय से आत्मा का चारित्र गुण आंशिक रूप से जलता है, उसे संज्वलन कषाय कहते हैं।

क्रोध = आक्रोश, आवेश, आपे से बाहर, गुस्सा
मान = अहंकार, घमंड, अभिमान, अहं (Ego)
माया = छल-कपट, धोखा, सच्चाई को छिपाना, दिखावा
लोभ = आसक्ति, लालच, लगाव (Attachment)

कषायों के अग्रिम वर्णन को समझने के लिए मुख्य रूप से दो बिन्दु ज्ञातव्य हैं-

1. **क्रोध, मान, माया व लोभ** इन चार कषायों में से एक समय में एक ही कषाय का उदय रहता है।
2. अनंतानुबंधी क्रोध के उदय होने पर

↓

अप्रत्याख्यान क्रोध
प्रत्याख्यानावरण क्रोध] इन तीनों के उदय की नियमा
सज्वलन क्रोध

अनंतानुबंधी क्रोध रहित
अप्रत्याख्यान क्रोध का उदय होने पर

↓

प्रत्याख्यानावरण क्रोध
संज्वलन क्रोध] इन दोनों के उदय की नियमा

अनंतानुबंधी व अप्रत्याख्यान क्रोध रहित
प्रत्याख्यानावरण क्रोध का उदय होने पर

↓

संज्ववलन क्रोध के उदय की नियमा

कर्म सिद्धान्त व सिद्धान्त में जहाँ अनंतानुबंधी कषाय के उदय के सम्बन्ध में वर्णन आये वहाँ यह समझना चाहिये कि उस जीव के अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यानावरण, संज्वलन– इन चारों कषायों का उदय है।

जहाँ अप्रत्याख्यान कषाय के उदय के सम्बन्ध में वर्णन आये वहाँ यह समझना चाहिये कि उस जीव के अनंतानुबंधी कषाय रहित शेष तीनों कषायों का उदय है।

जहाँ प्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय के सम्बन्ध में वर्णन आये वहाँ यह समझना चाहिए कि उस जीव के अनंतानुबंधी व अप्रत्याख्यान कषाय रहित शेष दोनों कषायों का उदय है।

जहाँ संज्वलन कषाय के उदय के सम्बन्ध में वर्णन आये वहाँ यह समझना चाहिए कि उस जीव के सिर्फ संज्वलन कषाय का ही उदय है।

2. कषायों की स्थिति का वर्णन

अनंतानुबंधी कषाय के तीन भंग–

1. **अनादि अपर्यवसित**
2. **अनादि सपर्यवसित**
3. **सादि सपर्यवसित**

1. **अनादि अपर्यवसित**– अभव्य जीव के अनादि काल से अनंतानुबंधी कषाय का उदय है एवं अनंतकाल तक उदय रहेगा। अत: अभव्य की अपेक्षा पहला अनादि अपर्यवसित भंग घटित होता है।

2. **अनादि सपर्यवसित**– अनादि मिथ्यादृष्टि भव्य जीव जिसने अभी तक सम्यक्त्व प्राप्त नहीं किया है उस जीव के अनादिकाल से अनंतानुबंधी कषाय का उदय है परन्तु वह जीव भव्य होने से अवश्य सम्यक्त्व प्राप्त करेगा एवं सम्यक्त्व प्राप्ति के साथ ही उसके अनंतानुबंधी कषाय के उदय का अंत हो जायेगा। अत: अनादि मिथ्यादृष्टि भव्य जीव की अपेक्षा दूसरा अनादि सपर्यवसित भंग घटित होता है।

3. **सादि सपर्यवसित**– अनादि मिथ्यादृष्टि भव्य जीव जब प्रथम बार सम्यक्त्व प्राप्त करता है तब उसके अनंतानुबंधी कषाय के उदय का अंत होता है परन्तु परिणामों में मलीनता के कारण जब पुन: पहला या दूसरा गुणस्थान प्राप्त करता है तब अनंतानुबंधी कषाय के उदय की आदि (प्रारंभ) होती है। जिस जीव के अनंतानुबंधी कषाय के उदय की आदि हुई है वह जीव विशुद्ध परिणामों से जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त में ही पुन: अनंतानुबंधी कषाय के उदय का अंत कर सकता है अथवा उत्कृष्ट देशोन अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल के अन्दर नियमा अनंतानुबंधी कषाय के उदय का अंत करेगा ही। क्योंकि एक बार सम्यक्त्व प्राप्त होने के पश्चात् उत्कृष्ट देशोन अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल तक ही जीव संसार में परिभ्रमण करता है तदनन्तर नियमा मोक्ष को प्राप्त करता है। इस प्रकार **तीसरे सादि सपर्यवसित भंग की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की व उत्कृष्ट स्थिति देशोन अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल** की घटित होती है।

अप्रत्याख्यान कषाय की जघन्य स्थिति – अन्तर्मुहूर्त्त
अप्रत्याख्यान कषाय की उत्कृष्ट स्थिति – 33 सागरोपम झाझेरी

अनंतानुबंधी कषाय रहित अप्रत्याख्यान कषाय का उदय तीसरे व चौथे गुणस्थान में होता है। तीसरे व चौथे गुणस्थान की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की है तथा चौथे गुणस्थान की उत्कृष्ट स्थिति अनुत्तर विमान की अपेक्षा 33 सागरोपम तथा मनुष्य भव में आने के पश्चात् जितने समय तक चौथे गुणस्थान में रहेगा उसे झाझेरी में लिया गया है।

प्रत्याख्यानावरण कषाय की जघन्य स्थिति - अन्तर्मुहूर्त्त
प्रत्याख्यानावरण कषाय की उत्कृष्ट स्थिति - देशोन करोड़ पूर्व

अनंतानुबंधी व अप्रत्याख्यान कषाय रहित प्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय पाँचवें गुणस्थान में होता है। पाँचवें गुणस्थान की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की है तथा उत्कृष्ट स्थिति देशोन करोड़ पूर्व की है क्योंकि अधिक से अधिक एक करोड़ पूर्व की स्थिति वाला ही श्रावक बन सकता है एवं उसमें भी आठ वर्ष से अधिक वय वाला ही श्रावक व्रत स्वीकार कर सकता है। अतः एक करोड़ पूर्व में से 8 वर्ष झाझेरी कम काल तक जीव पाँचवें गुणस्थान में रहता है अतः देशोन करोड़ पूर्व कहा गया है।

संज्वलन कषाय की जघन्य स्थिति - 1 समय
संज्वलन कषाय की उत्कृष्ट स्थिति - देशोन करोड़ पूर्व

एक समय की जघन्य स्थिति काल करने की अपेक्षा समझना चाहिए। 11वें उपशांत मोहनीय गुणस्थान से जीव 10वें गुणस्थान में आया वहाँ एक समय संज्वलन लोभ का वेदन कर काल करके अनुत्तर विमान में उत्पन्न हो गया। अनुत्तर विमान में अप्रत्याख्यान व प्रत्याख्यानावरण कषाय का भी उदय रहता है अतः सिर्फ संज्वलन कषाय का उदय 10वें गुणस्थान में एक समय तक ही रहने से संज्वलन कषाय की जघन्य स्थिति 1 समय की बताई है। उत्कृष्ट स्थिति का वर्णन प्रत्याख्यानावरण कषाय के वर्णन के समान ही समझना चाहिए।

कषाय	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति
अनंतानुबंधी		
I अनादि अपर्यवसित	---	---
II अनादि सपर्यवसित	---	---
III सादि सपर्यवसित	अन्तर्मुहूर्त्त	देशोन अर्द्धपुद्गल परावर्तन
अप्रत्याख्यान	अन्तर्मुहूर्त्त	33 सागरोपम झाझेरी
प्रत्याख्यानावरण	अन्तर्मुहूर्त्त	देशोन करोड़ पूर्व
संज्वलन	एक समय	देशोन करोड़ पूर्व

कषाय	स्थिति
अनंतानुबंधी	जावज्जीव
अप्रत्याख्यान	1 वर्ष
प्रत्याख्यानावरण	4 माह
संज्वलन	1 पक्ष

आपने थोकड़े में कषायों की स्थिति का वर्णन भिन्न प्रकार से किया है, क्या कर्मग्रन्थकार का उपर्युक्त स्थिति वर्णन सही नहीं है?

जिज्ञासा– कर्मग्रंथ भाग 1 गाथा 18 में कषायों की स्थिति का वर्णन उपरोक्त प्रकार से किया है:–

समाधान– ग्रन्थकार ने स्वयं अपनी स्वोपज्ञ वृत्ति में यह स्पष्ट किया है कि कषायों का उपर्युक्त स्थिति वर्णन व्यवहार नय की अपेक्षा समझना चाहिए। अन्यथा बाहुबली आदि की संज्वलन कषाय की स्थिति 1 पक्ष से अधिक सुनी जाती है, इसी प्रकार अप्रत्याख्यान व प्रत्याख्यानावरण कषाय की स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की सुनी जाती है।*

परन्तु उपर्युक्त स्थिति वर्णन व्यवहार नय की अपेक्षा होने पर भी सामान्य विद्यार्थी के लिए अनेक भ्रांतियाँ पैदा करने वाला बन जाता है तथा कषायों की वास्तविक स्थिति का परिज्ञान विद्यार्थी को नहीं हो पाता है। अत: भ्रान्ति को दूर करके आगम व कर्म सिद्धान्त में समागत कषायों की वास्तविक स्थिति का वर्णन थोकड़े में किया गया है।

---

* **टिप्पण**– व्यवहार नयमाश्रित्योच्यते; अन्यथा हि बाहुबलि प्रभृतीनां पक्षादिपरतोऽपि संज्वलनाद्यवस्थिति: श्रूयते, अन्येषां च संयतादीनामाकर्षादिकाले प्रत्याख्यानावरणानाम प्रत्याख्यानावरणानामनन्तानुबंधिनां चान्तर्मुहूर्त्तादिकं काल मुदय: श्रूयत इति।

–देवेन्द्र सूरि विरचित स्वोपज्ञ टीकोपेत: कर्म विपाक नामा प्रथम: कर्मग्रन्थ: पृ. सं.– 35

3. कषायों के उदय में गतिबंध

अनंतानुबंधी	चारों गति बंध संभव है
अप्रत्याख्यान	मनुष्य व देवगति बंध संभव है
प्रत्याख्यानावरण	देवगति बंध
संज्वलन	देवगति बंध

जिज्ञासा– कर्म ग्रंथ भाग 1 गाथा 18 में कषायों में गतिबंध निम्नोक्त प्रकार से बताया है–

कषाय	**गतिबंध**
अनन्तानुबंधी	नरक
अप्रत्याख्यान	तिर्यञ्च
प्रत्याख्यानावरण	मनुष्य
संज्वलन	देव

आपने थोकड़े में कषायों में गतिबंध भिन्न प्रकार से बताया है। क्या कर्मग्रन्थकार का उपर्युक्त गतिबंध का वर्णन सही नहीं है?

समाधान– ग्रन्थकार ने स्वयं अपनी स्वोपज्ञ वृत्ति में यह स्पष्ट किया है कि उपर्युक्त गतिबंध का वर्णन व्यवहार नय की अपेक्षा समझना चाहिए, अन्यथा अनंतानुबंधी कषाय के उदय में भी जीव नवग्रैवेयक में उत्पन्न होते हैं आदि स्पष्टता की है।* ग्रन्थकार ने व्यवहार नय की अपेक्षा उपर्युक्त गतिबंध का वर्णन क्यों किया है यह स्पष्ट कहना कठिन है, परन्तु ग्रन्थकार ने अपने द्वितीय कर्मग्रन्थ में गुणस्थानों में गतिबंध का जो वास्तविक कथन किया है उससे व्यवहार नय की अपेक्षा उक्त कथन स्पष्ट रूप से विरोधी प्रतीत होता है। इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है:–

---

* **टिप्पण**– इदमपि व्यवहारनयमधिकृत्योच्यते; अन्यथा हि अनंतानुबंधयुदयवतामपि मिथ्यादृशां केषाञ्चिदुपरितनग्रैवेयकेषूत्पतिः श्रूयते, प्रत्याख्यानावरणोदयवतां देशविरतानां देवगतिः, अप्रत्याख्यानावरणोदयवतां च सम्यग्दृष्टि देवानां मनुष्य गतिः।

– देवेन्द्रसूरि विरचित स्वोपज्ञ टीकोपेतः कर्म विपाक नामा प्रथम कर्मग्रंथ पृ. सं.–35

गुणस्थानों में कषायों का उदयः-

कषाय	उदय योग्य गुणस्थान
अनन्तानुबंधी कषाय	1, 2
अनन्तानुबंधी कषाय रहित अप्रत्याख्यान कषाय	3, 4
अनन्तानुबंधी अप्रत्याख्यान कषाय रहित प्रत्याख्यानावरण कषाय	5
अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान व प्रत्याख्यानावरण कषाय रहित संज्वलन कषाय	6 से 10

गुणस्थानों में गति बंधः-

पहले गुणस्थान में	चारों गति बंध
दूसरे गुणस्थान में	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
तीसरे गुणस्थान में	मनुष्य, देव
चौथे गुणस्थान में	मनुष्य, देव
पाँचवें गुणस्थान में	देव

उपर्युक्त दोनों चार्ट से यह स्पष्ट है कि अनन्तानुबंधी कषाय के उदय में चारों गति का बंध संभव है। अप्रत्याख्यान कषाय के उदय में मनुष्य व देवगति का बंध ही संभव है परन्तु इस कषाय के उदय में तिर्यञ्च गति का बंध माना गया है जो असंगत है।

प्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय में सिर्फ देवगति का बंध ही संभव है परन्तु इसमें मनुष्य गति का बंध माना है जो कि आगम व कर्म सिद्धान्त के विरुद्ध है।

व्यवहार नय की अपेक्षा उक्त गतिबंध के कथन का विशेष प्रयोजन दृष्टिगत न होने से तथा सामान्य विद्यार्थी के मन में अनेक गलत धारणाओं को स्थापित करने वाला होने से थोकड़े में व्यवहार नय की अपेक्षा कथन न करके ग्रन्थकार ने जो द्वितीय कर्मग्रन्थ में गति बंध का वास्तविक कथन किया है उसे ही थोकड़े में रखा गया है।

4. कषायों की 16 उपमाएँ

<u>**क्रोध की चार उपमाएँ**</u>-

क्रोध के कारण प्रीति में भेद (दरार) पड़ जाता है अतः क्रोध को दरार की उपमा दी है।

1. **पर्वत राजि तुल्य क्रोधः**- राजि = रेखा* (दरार)।

जिस प्रकार पर्वत में दरार पड़ जाने पर उस दरार का मिटना अत्यन्त दुष्कर है, उसी प्रकार जिस क्रोध का शांत होना अत्यन्त दुष्कर है वह पर्वत राजि तुल्य क्रोध है।

2. **पृथ्वी राजि तुल्य क्रोधः**- जिस प्रकार तालाब के सूखने पर पड़ने वाली दरार का मिटना दुष्कर है, उसी प्रकार जिस क्रोध का शांत होना दुष्कर है वह पृथ्वी राजि तुल्य क्रोध है।

3. **रेणु राजि तुल्य क्रोधः**- जिस प्रकार बालू (रेत) में खींची हुई रेखा का हवा आदि से सहज ही मिटना हो जाता है, उसी प्रकार जो क्रोध सहज ही शांत हो जाता है वह रेणु राजि तुल्य क्रोध है।

4. **जल राजि तुल्य क्रोध :** जिस प्रकार जल में खींची हुई रेखा अत्यन्त सहजता से मिट जाती है उसी प्रकार जो क्रोध अत्यन्त सहजता से शांत हो जाय वह जल राजि तुल्य क्रोध है।

<u>**मान की चार उपमाएँ**</u>-

मान में अकड़न (कठोरता) होती है, उसमें नम्रता, कोमलता नहीं होती अतः मान को स्तम्भ (खम्भे) की उपमा दी है।

1. **शैल स्तम्भ तुल्य मानः**- शैल = शिला**, पत्थर। स्तम्भ = खंभा।

जिस प्रकार पत्थर के खम्भे का नमना अत्यन्त दुष्कर है, उसी प्रकार जिस मान का नमना अत्यन्त दुष्कर हो वह शैल स्तम्भ तुल्य मान है।

2. **अस्थि स्तम्भ तुल्य मानः**- अस्थि = हड्डी।

जिस प्रकार हड्डी के खम्भे का नमना दुष्कर है, उसी प्रकार जिस मान का नमना दुष्कर हो वह अस्थि स्तम्भ तुल्य मान है।

3. **दारु स्तंभ तुल्य मानः**- दारु = लकड़ी, काष्ठ।

जिस प्रकार लकड़ी का खम्भा तैल वगैरह का प्रयोग करने पर सहजता से नम जाता है उसी प्रकार जो मान सहजता से नमाया जा सके वह दारु स्तम्भ तुल्य मान है।

---

* **टिप्पण**- संस्कृत हिन्दी शब्दकोश पृ. सं.- 917

** शिला विकारः शैलः। श्रीमद् ठाणांग सूत्र ठाणा-4, उद्देशक-2 श्री अभयदेव सूरिकृत वृत्ति पृ. सं.- 372

4. **तिनिशलता स्तम्भ तुल्य मान**:- तिनिश = एक प्रकार का वृक्ष विशेष; लता = बेल, शाखा।

तिनिश वृक्ष की शाखा अत्यन्त मृदु होती है।◆ जिस प्रकार तिनिशलता का खम्भा अत्यन्त सहजता से नम जाता है, उसी प्रकार जो मान अत्यन्त सहजता से नम जाता है वह तिनिशलता स्तंभ तुल्य मान है।

<u>माया की चार उपमाएँ</u>-

माया में कुटिलता, वक्रता, टेढ़ापन होता है अतः माया को वक्रता की उपमा दी है।

1. **वंशीमूल केतन तुल्य माया**:- वंश = बांस❑, मूल = जड़●, केतन = वक्र⊛, टेढ़ी वस्तु।

जिस प्रकार बांस की घनी जड़ के टेढ़ेपन का दूर होना अत्यन्त दुष्कर है, उसी प्रकार जिस माया का दूर होना अत्यन्त दुष्कर हो वह वंशीमूल केतन तुल्य माया है।

2. **मेण्ढविषाण केतन तुल्य माया**:- मेण्ढ = मेष (भेड़, मेंढ़ा) विषाण = सींग*।

जिस प्रकार भेड़ के टेढ़े सींग का सीधा होना दुष्कर है, उसी प्रकार जिस माया का दूर होना दुष्कर हो वह मेण्ढविषाण केतन तुल्य माया है।

3. **गोमूत्रिका केतन तुल्य माया**:- सामान्यतः बैल के मूत्र की लकीर टेढ़ी होती है किन्तु अल्प प्रयत्न से ऐसा सहज संभव है कि उसका मूत्र सीधी रेखा में गिरे, उसी प्रकार जो माया सहजता से दूर हो सके वह गोमूत्रिका केतन तुल्य माया है।

4. **अवलेखनिका केतन तुल्य माया**:- अवलेखनिका = बांस का छिलका♦ जिस प्रकार बांस के छिलके का टेढ़ापन अत्यन्त सहजता से सीधा किया जा सकता है, उसी प्रकार जो माया अत्यन्त सहजता से दूर हो जाय, वह अवलेखनिका केतन तुल्य माया है।

◆ तिनिशो वृक्ष विशेषस्तस्य लता कम्बा तिनिशलता, सा चात्यन्तमृद्वीति।
-श्रीमद् ठाणांग सूत्र, ठाणा-4, उद्देशक-2 श्री अभयदेवसूरिकृत वृत्ति। पृ. सं.- 371

❑ संस्कृत हिन्दी शब्दकोश पृ. सं.- 955

● संस्कृत हिन्दी शब्दकोश पृ. सं.- 871

⊛ केतनं सामान्येन वक्रं वस्तु पुष्पकरण्डस्य वा सम्बन्धि मुष्टिग्रहणस्थानं वंशविदलकम्, तच्च वक्रं भवति केवलमिह सामान्येन वक्रं वस्तु केतनं गृह्यते।

* मेण्ढ विषाणं मेषशृङ्गम्।

♦ अवलेहणिय ति अवलिख्यमानस्य वंशशलाकादेर्या प्रतन्वी त्वक् साऽवलेखनिकेति।
-श्रीमद् ठाणांग सूत्र ठाणा-4, उद्देशक-2 श्री अभयदेव सूरि कृत वृत्ति, पृ. सं. - 371

<u>लोभ की चार उपमाएँ</u>-

लोभ में आसक्ति का रंग चढ़ा रहता है, अतः लोभ को रंग की उपमा दी है।

1. **कृमिराग रक्त तुल्य लोभ :** कृमिराग = एक प्रकार का लाल रंग, रक्त = रंगा हुआ।

जिस प्रकार कृमिराग से रंगे हुए वस्त्र का रंग छूटना अत्यन्त दुष्कर है (आग में जलने पर भी उसका रंग नहीं छूटता है क्योंकि उसको जलाने पर उसकी राख भी लाल होती है)❑ उसी प्रकार जिस लोभ का दूर होना अत्यन्त दुष्कर है वह कृमिराग रक्त तुल्य लोभ है।

2. **कर्दम राग रक्त तुल्य लोभः**- कर्दम = कीचड़ (गाड़ी के पहिये का कीचड़, ग्रीस आदि)● जिस प्रकार कीचड़ से रंगे हुए (भरे हुए) वस्त्र का रंग अत्यन्त परिश्रम करने पर अति कष्टपूर्वक छूटता है। उसी प्रकार जो लोभ अति परिश्रम से कष्टपूर्वक दूर किया जा सके वह कर्दम राग रक्त तुल्य लोभ है।

3. **खंजन राग रक्त तुल्य लोभः**- खंजन = दीप आदि का काजल।● जिस प्रकार काजल से रंगे हुए वस्त्र का रंग छूटना सहज है, उसी प्रकार जिस लोभ का दूर होना सहज है वह खंजन राग रक्त तुल्य लोभ है।

4. **हारिद्र राग रक्त तुल्य लोभः**- हारिद्र = हल्दी। जिस प्रकार हल्दी से रंगे हुए वस्त्र का रंग धूप में रखने पर अत्यन्त सहजता से छूट जाता है उसी प्रकार जो लोभ अत्यन्त सहजता से दूर हो जाये वह हारिद्र राग रक्त तुल्य लोभ है।

श्रीमत् स्थानांग सूत्र के अनुसार-

कषाय की उपर्युक्त 16 अवस्थाओं में काल करने पर प्राप्त होने वाली गति -

कषाय की 16 अवस्थाएँ	काल करने पर प्राप्त होने वाली गति

❑ कृमिरागे वृद्ध सम्प्रदायोऽयम्-मनुष्यादीनां रूधिरं गृहीत्वा केनापि योगेन युक्तं भाजने स्थाप्यते, ततस्तत्र कृमय उत्पद्यन्ते ते च वाताभिलाषिणः छिद्रनिर्गता आसन्ना भ्रमंतो निर्हारलाला मुञ्चन्ति, ताः कृमि सूत्रं भण्यते, तच्च स्वपरिणामरागरञ्जितमेव भवति, अन्ये भणन्ति-ये-रूधिरे कृमय उत्पद्यन्ते तान् तत्रैव मृदित्वा कचवरमुत्तार्य तद्रसे कञ्चिद् योगं प्रक्षिप्य पट्टसूत्रं रञ्जयन्ति, स च रसः कृमिरागो भण्यते अनुत्तारीति, तत्र कृमीणां रागो रञ्ज करसः कृमिरागः, तेन रक्तं कृमिराग रक्तम्।.... तथाहि-कृमिरागरक्तम् वस्त्रं दग्धमपि न रागानुबंधं मुञ्चति, तद्भस्मनोऽपि रक्तत्वाद्।

-श्रीमद् ठाणांग सूत्र ठाणा-4, उद्देशक-2 श्री अभयदेवसूरिकृत वृत्ति, पृ. सं.- 372

● कर्दमो गोवाटादीनाम खञ्जन दीपादीनाम्।

- श्रीमद् ठाणांग सूत्र ठाणा-4, उद्देशक-2 श्री अभयदेवसूरिकृत वृत्ति पृ. सं.- 372

1.	पर्वत राजि तुल्य क्रोध	नरक गति
2.	पृथ्वी राजि तुल्य क्रोध	तिर्यञ्च गति
3.	रेणु राजि तुल्य क्रोध	मनुष्य गति
4.	जल राजि तुल्य क्रोध	देव गति
5.	शैल स्तम्भ तुल्य मान	नरक गति
6.	अस्थि स्तम्भ तुल्य मान	तिर्यञ्च गति
7.	दारु स्तम्भ तुल्य मान	मनुष्य गति
8.	तिनिशलता तुल्य मान	देव गति
9.	वंशीमूल केतन तुल्य माया	नरक गति
10.	मेण्ढ विषाण केतन तुल्य माया	तिर्यञ्च गति
11.	गोमूत्रिका केतन तुल्य माया	मनुष्य गति
12.	अवलेखनिका केतन तुल्य माया	देव गति
13.	कृमि राग रक्त तुल्य लोभ	नरक गति
14.	कर्दम राग रक्त तुल्य लोभ	तिर्यञ्च गति
15.	खंजन राग रक्त तुल्य लोभ	मनुष्य गति
16.	हारिद्र राग रक्त तुल्य लोभ	देव गति

नोट- उपर्युक्त वर्णन कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य व सन्नी तिर्यञ्च की अपेक्षा समझना चाहिए। नैरयिक, देव, एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय आदि जीव भव स्वभाव से जहाँ उत्पन्न नहीं हो सकते हैं उसे यहाँ ग्रहण नहीं करना चाहिए।

जिज्ञासा:- नव्य कर्म ग्रन्थ भाग-1 गाथा-19, 20 में क्रोध, मान, माया व लोभ की चार-चार उपमाओं को क्रमशः अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यानावरण व संज्वलन कषाय की उपमा के रूप में व्यक्त किया गया है यथा-

पर्वत राजि तुल्य क्रोध अनन्तानुबंधी क्रोध है
पृथ्वी राजि तुल्य क्रोध अप्रत्याख्यान क्रोध है
रेणु राजि तुल्य क्रोध प्रत्याख्यानावरण क्रोध है
जल राजि तुल्य क्रोध संज्वलन क्रोध है

इसी प्रकार मान, माया, लोभ के विषय में भी समझ लेना चाहिए। परन्तु थोकड़े में उपर्युक्त प्रकार से कथन नहीं किया है इसका क्या कारण है?

समाधानः- श्रीमद् गर्गमहर्षि ने कर्मग्रन्थ में 16 कषायों के वर्णन के प्रसंग में उनके साथ उपमाओं का सम्बन्ध नहीं जोड़ा है। श्रीमत् स्थानांग सूत्र स्थान-4 उद्देशक-2 में कषायों की उपर्युक्त 16 उपमाएँ वर्णित हैं। आगम में पर्वत राजि, पृथ्वी राजि आदि 16 उपमाओं के साथ अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान आदि कषाय का सम्बन्ध नहीं जोड़ा है❑ तथा आगमानुसार अनन्तानुबंधी क्रोध के उदय वाला जीव सदैव पर्वत राजि तुल्य क्रोध से युक्त होगा, ऐसा नहीं हैं। क्योंकि यदि अनन्तानुबंधी क्रोध वाला जीव सदैव पर्वत राजि तुल्य क्रोध से युक्त होगा तो वह नरक के सिवाय शेष तीनों गतियों में जा ही नहीं सकता है। परन्तु श्रीमद् भगवती सूत्र, श्रीमत् प्रज्ञापना सूत्र आदि के अनुसार यह सुस्पष्ट है कि अनन्तानुबंधी कषाय के उदय वाला जीव चारों गतियों में जा सकता है। इसी प्रकार उपमाओं में पृथ्वी राजि तुल्य क्रोध वाले जीव का काल करके तिर्यञ्च गति में उत्पन्न होना बताया है, यदि अप्रत्याख्यान कषाय के साथ पृथ्वी राजि तुल्य क्रोध का सम्बन्ध जोड़ा जाये तो वह भी आगमानुरूप नहीं है, क्योंकि आगमानुसार अप्रत्याख्यान क्रोध वाला जीव काल करके मनुष्य व देवगति में जा सकता है, इसी प्रकार रेणु राजि तुल्य क्रोध वाले जीव का काल करके मनुष्य गति में उत्पन्न होना बताया है। यदि रेणु राजि तुल्य क्रोध के साथ प्रत्याख्यानावरण कषाय का संबंध जोड़ा जाये तो वह भी आगमानुरूप नहीं है क्योंकि आगमानुसार प्रत्याख्यानावरण क्रोध वाला जीव काल करके देव गति में ही जाता है।

क्रोध के समान ही मान, माया, लोभ का समझना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि कषाय की 16 उपमाओं के साथ अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान आदि का सम्बध जोड़ने पर ऐसा प्रतीत होता है कि अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यानावरण व संज्वलन कषाय क्रमशः तीव्र, मंद, मन्दतर एवं मन्दतम है परन्तु वस्तुतः वैसा आवश्यक नहीं है। क्योंकि जिन जीवों के अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया व लोभ का उदय होता है, वे सभी तीव्र क्रोधी, मानी, मायी व लोभी ही होते हैं ऐसा आगमकारों का अभिमत नहीं है। जैसे- नवग्रैवेयक में रहे हुए मिथ्यादृष्टि देवों के तीव्र क्रोध, मान, माया व लोभ आदि का उदय नहीं होता है। ध्यातव्य है कि सभी मिथ्यादृष्टि जीवों के अनन्तानुबंधी कषाय का उदय रहता ही है। इसी प्रकार 56 अन्तर्द्वीप वाले युगलिक मनुष्य भी एकान्त मिथ्यादृष्टि होते हैं। श्रीमद् जीवाजीवाभिगम सूत्र की तृतीय प्रतिपत्ति में 56 अन्तर्द्वीप के युगलिकों को अल्पकषायी बताया है। लोक व्यवहार में भी जिन्हें जिनधर्म पर श्रद्धा नहीं होती अर्थात् जो मिथ्यादृष्टि होते हैं ऐसे व्यक्ति भी अल्पकषायी देखे जाते हैं।

❑ पश्चात्वर्ती कुछ टीकाकारों व ग्रन्थकारों ने उपमाओं के साथ अनन्तानुबंधी आदि कषाय का संबंध जोड़ा है। परन्तु आगम व कर्म सिद्धान्त में वर्णित अन्य विषयों से विरुद्ध होने से उसे स्वीकार नहीं किया जा सकता।

इसी प्रकार जिन जीवों के संज्वलन कषाय का उदय होता है। वे सभी मन्दतम कषायी ही होते हैं, ऐसा कहना युक्ति संगत प्रतीत नहीं होता है। क्योंकि छठे गुणस्थानवर्ती सभी मुनि अत्यल्प क्रोध, मान, माया, लोभ वाले ही होते हैं या सभी मुनियों का क्रोधादि कषाय शीघ्र ही शांत हो जाता है, ऐसा नहीं है।

सारांश यह है कि अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान आदि चारों कषायों में से कोई भी एक दूसरे से तीव्र एवं मन्द हो सकता है।

उदाहरण के तौर पर चार व्यक्ति हैं उसमें पहले व्यक्ति को अनन्तानुबंधी क्रोध का उदय है। दूसरे व्यक्ति को अप्रत्याख्यान क्रोध का उदय है। तीसरे व्यक्ति को प्रत्याख्यानावरण क्रोध का उदय है। चौथे व्यक्ति को संज्वलन क्रोध का उदय है।

इन चारों प्रकार के व्यक्तियों में जिसको अनन्तानुबंधी क्रोध का उदय है वह तीव्र क्रोध वाला होगा, जिसको अप्रत्याख्यान क्रोध का उदय है वह उससे मंद क्रोध वाला होगा, जिसको प्रत्याख्यानावरण क्रोध का उदय है वह उससे मन्दतर क्रोध वाला होगा, ऐसा नियम नहीं है।

अनन्तानुबंधी क्रोध के उदय वाला जीव मंद क्रोधी एवं संज्वलन क्रोध के उदय वाला जीव तीव्र क्रोधी भी हो सकता है अर्थात् चारों व्यक्तियों में से कोई भी एक दूसरे से अधिक तीव्र क्रोध वाला हो सकता है।

उपर्युक्त वर्णन से ऐसा स्पष्ट है कि कषायों की 16 उपमाओं को अनन्तानुबंधी आदि से नहीं जोड़ना चाहिए।

—————— 0 —————— 0 ——————

सेवं भंते! सेवं भंते!